

परियोजना का संक्षिप्त विवरण

राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना (एन.ए.आई.पी.) के अंतर्गत 3 वर्ष में हरियाणा में पश्चिमी यमुना नहर क्षेत्र के लिए एक जी.आई.एस आधारित निर्णय सहायक तंत्र (डी.एस.एस.) का विकास किया जाएगा जोकि नहरी क्षेत्र में जैव-भौतिक संसाधनों तथा सामाजिक-आर्थिक आँकड़ों के समाकलन से कम जल आपूर्ति, निम्न गुणवत्ता की भूमि तथा जल (लवणीय/क्षारीय) तथा जलमग्न वातावरण में विभिन्न अनिश्चितताओं तथा अवरोधों को ध्यान में रखते हुए कम उत्पादकता वाले क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने हेतु सर्वोत्तम प्रबंधन क्रियाओं (बी.एम.पी.) को विकसित करने का काम करेगा। कम्प्यूटर आधारित विकसित निर्णय सहायक तंत्र को विभिन्न परिदृश्यों के अंतर्गत प्रमाणीकृत करके बारीकी से व्यवस्थित करने के बाद नहरी क्षेत्र में हेड, मध्यम तथा टेल खण्ड स्तर पर नहरी जल के कई परिदृश्यों में वितरण के लिए संभावित/व्यवहारिक योजना को विकसित करने हेतु कार्यान्वित किया जाएगा। नहरी क्षेत्र के डाटाबेस तथा निर्णय सहायक तंत्र के विकास के लिए सुदूर संवेदन, जी.पी.एस. आधारित भूक्षेत्र अवलोकन, सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन (पी.आर.ए.), जी.आई.एस, मॉडलिंग तथा उन्नत कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग इत्यादि परिस्थितिजन्य प्रौद्योगिकी (स्टेट ऑफ दी आर्ट टेक्नोलाजी) को काम में लिया जाएगा। डी.एस.एस. का ज्ञान प्रभावी तरीके से भागीदारों (स्टेकहॉल्डर्स)—समकक्ष विभागों, नहरी जल उपयोग संघों, तथा किसानों को प्रक्षेत्र प्रदर्शनो, प्रशिक्षणो, कार्यशालाओं तथा फील्ड दिवसों के द्वारा स्थानांतरित कर दिया जाएगा जोकि उनको वर्तमान परिदृश्यों के अंतर्गत सही निर्णय लेने में सहायक होगा। तीन सहभागी अनुसंधान संस्थाओं की विशेषज्ञता का उपयोग करने के लिए यह परियोजना बहु-विषयक तथा कंसोर्टियम रूप में है जोकि मॉडलिंग के बेजोड अंतरंग कम्पोनेन्ट के साथ-साथ भागीदारों की सेवा एवं सहायता से सीमित व निम्न गुणवत्ता वाले संसाधनों से अधिक खाद्य उत्पादन करने के लिए विश्वास का संचार करने का काम करेगी।

उद्देश्य

1. सुदूर संवेदन, जी.पी.एस. आधारित भू-अवलोकन, सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन तथा जी.आई.एस. के द्वारा नहरी क्षेत्र के जैवभौतिक एवं सामाजिक-आर्थिक संसाधनों को परिलक्षित करना।
2. फसल उत्पादन फलन तथा जी.आई.एस. का उपयोग करते हुये प्रक्षेत्र से नहरी स्तर पर विभिन्न सीमित संसाधन तथा प्रबंधन परिदृश्यों के अंतर्गत फसल उपज, भूमि तथा जल उत्पादकता का पूर्वानुमान तथा इनका स्तर बढ़ाना।
3. नहरी क्षेत्र में लवणीय वातावरण में उत्पादकता बढ़ाने हेतु सर्वोत्तम प्रबंधन क्रियाओं को चुनने के लिए निर्णय सहायक तंत्र को विकसित करना, प्रमाणित करना तथा कार्यान्वित करना।
4. ज्ञान के प्रसार हेतु प्रक्षेत्र प्रदर्शनो, प्रशिक्षणो, कार्यशालाओं तथा फील्ड दिवसों द्वारा निर्णय सहायक तंत्र आधारित परिदृश्यों पर भागीदारों की क्षमता तथा निपुणता का गठन करना।

अपेक्षित डिलिवरेबल्स

पश्चिमी यमुना नहर क्षेत्र का इरी-एग्रो स्थानिक डेटाबेस; बी.एम.पी. की सूची तथा उत्पादकता बढ़ाने हेतु अनुकूलन उपाय; उत्पादकता बढ़ाने के लिए बी.एम.पी. विकास हेतु डी.एस.एस.; विभिन्न भागीदारों हेतु प्रभावी डी.एस.एस. रूपांतर; डी.एस.एस. को काम में लेने के लिए भागीदारों की बेहतर क्षमता तथा निपुणता— सी.ए.डी.ए, सिंचाई, कृषि तथा अन्य विभागों से 30 अधिकारीगण; नहरी जल उपयोग संघों से 500 सदस्यगण; नहर क्षेत्र से 500 किसानभाई; जी.आई.एस. तथा डी.एस.एस. के प्रयोग करने में 30 प्रशिक्षित एनएआरएस वैज्ञानिक।

अधिक जानकारी हेतु निदेशक या कंसोर्टियम मुख्य अन्वेषक, सी एस एस आर आई, करनाल से सम्पर्क करें।